Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **3**

UGA–240

B.A. (Part–II) Examination, 2021

RAJASTHANI

Paper - II

(मध्यकालीन राजस्थानी गद्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

(सवालां रा जबाव राजस्थानी या हिन्दी में दिया जाय सके।)

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

नोट :– नीचै लिख्या सवालां रा पड़ूत्तर लिखो (सबद सीमा **50** सबद)।

1. (i) हरणी सूं धरमेलो कुण अर क्यूं करियो ?

   (ii) पाबूजी रै मात-पिता रो नाम बताओ।

(iii) 'रेसामियौ' में किसी सांस्कृतिक परंपरा रो महत्त्व बताइज्यो है।

(iv) कहवार सरवहिया रै बेटे रो नाम कांई हो ?

(v) कहवार नै कुण बंदी बणावै अर कठै ?

(vi) अलाउद्दीन पातिसाह 'लखावट' नाम किणरो दियो ?

(vii) बीजाणंद वाचा दिया पण बगत उपरांत नी आयो जद सैणी कांई करियो ?

(viii) पाबूजी लोक देवता रै रूप में क्यूं पूजीजै ?

(ix) राजस्थानी में गद्य-पद्य मिश्रित रचना ने कांई कैबै ?

(x) मुहता नैणसी राजस्थानी साहित्य खातर कांई योगदान करियो ?

खण्ड–ब

नोट :– सात सवाला मांय सूं किणी **पांच** प्रश्नां रा पड़ूत्तर देवो (सबद सीमा **200** सबद)।

2. 'राजा भोज, माघ पंडित अर डोकरी री बात' नै आपरा सबदां में लिखतां थकां समझाओ कै उणसूं कांई सीख मिलै ?

3. अनंतराम सांखला रै दरबार में 'सुख-वैभाव रो वरणाव कहवार विलास में होयो है' उणरो आपरै सबदां में खुलासो करो।

नीचै लिख्यौड़ा गद्यांसा री सप्रसंग व्याख्या करो :

4. ताहरां सातल साम्हो आइ हाथ जोड़ि सलाम की। करिनै कहयो हम अैसी वात कहते हां, सूं हरामखोरी लागती है, पिणहजरत कहते हैं, जू कोई तरवार झेलै नहीं, सू हम झेलां, ताहरां पातिसाह कह्यो—साबास सातल। सद रहमत है तुम कूं साबास। सातलं कह्यो हजरत! छै मास की पस पाऊं, सूल सराजाम करूं।

5. आ घोड़ी काछेली पासां जींदराव खीची मांगी। तद चारण न दीवी। अर बूड़ै मांगी तद पण न दीवी। काछैलां घोड़ी पाबूजी ने दीवी। तद कही—राज! थां नै घोड़ी देवां छां; थे म्हारी परबरदास्त घणी करजो। तद पाबूजी कही—थांनू काम पड़ियां जूती पहरां नहीं। ओ बोलकर लीवी। तै सूं जीदराब अर बूड़ै दोनां ही चारणां सूं रीस कीवी।

6. अकोजी कहै–इण अनंतराय रो काळो मूंढो करै नै गधेड़ै चढावो। पछै अर्णी मैं तांख, बेड़यां, हतकड़्यां जड़ावो। भाट मांगल कहै–ओर तो कुपीत अबार, मती करावो। इण नै ठीकरा में पाणी पाय नै भूंगड़ा ते बेगा चुगावो। तरां भूंगड़ा लेबा ने तो आदमी नै मेल्यो नै आप सराई साथ सूं दरबार आया। ओर आपरा ने अनंतराय जी रा आछा–आछा रजपूत पड़िया ज्यूं नै दाग दिराया। चाकर भूंगड़ा लायो जो अनंतराय जी रा मूंढा आगै कीधा। नहीं खाधा जद तीखी आरां रा चपरका दीधा।

7. तरां महियार्यो गोरधन अरज करी–अन्नदाता, पांणी ऊपर अतरी रीस नहीं कीजै। अेक अरज हूं करूं सो सांभक लीजै। इण ने बूरीयां थकां घणा जीव जंत मर जावसी। नै जिणरो पाप लागसी। अर इणां म मोती निपजै छै। जिणारी पैदास मिट जावसी।

8. तरै राजा कह्यौ "घणा चूका, दीधो बिण दीधो हुवै नहीं, नै दूजी बाई काई नहीं।" तरै जोसी तेड़ि नै लगन लिखाय धार, मेलियो नै दूजौ कमदारां ने कागद दियो तिण में लिख्यो, जगदेव जी नै जान साथै ल्यावजो नै उण बिगर आया तो साहो होसी नहीं।

खण्ड–स

नोट :– नीचै दियोड़ा सवालां मांय सूं किणी **दो** रा पड़ूत्तर देवो (सबद–सीमा **500** सबद)।

9. कहवार–विलास रो कथासार अर इणरी विसेसतावां लिखो।

10. मध्यकालीन गध री किणी दो विधावां माथै सांतरी टीप लिखो :

    (क) वात

    (ख) ख्यात

    (ग) वचनिका

    (घ) दवावैत

11. राजस्थानी साहित्य में मध्यकालीन जैन शैली री गद्य विधावां माथै आलेख लिखो।

12. राजस्थानी 'बात संग्रह' में किसी बात आपने दाय आई अर क्यूं ? उण बात री खरी विरोळ करो।